ISSN : 2320-7604
RNI NO. : DELHIN/2008/27588
Listed in UGC Care journal
October, 21, Part 1, Serial.No. 143

त्रैमासिक

बहुरि नहिं आवना

अंक-23
अप्रैल, 2023 - जून, 2023
मूल्य : 200 रुपए

आजीवक महासंघ ट्रस्ट द्वारा निर्गत

संस्कृति, धर्म, दर्शन और साहित्य

वर्ष : 15
अंक : 23
अंक : अप्रैल, 2023 - जून, 2023
संस्थाओं के लिए प्रति कापी : 100 रुपए
वार्षिक सदस्यता शुल्क : 3000 रुपए
आजीवन सदस्यता : 10000 रुपए

संपादकीय पता
जे-5, यमुना अपार्टमेंट,
होली चौक, देवली,
नई दिल्ली-110080
मोबाइल : 09868701556
Email: bahurinahiawana14@gmail.com
Website-www.bahurinahiawana.in

Advertisement Rate
Full Page Rs. 20,000/-
Half Page Rs. 10,000/-
Qtr. Page Rs. 5,000/-
Back Cover Rs. 40,000/- (four colour)
Inside Front Rs.35,000/- (four colour)
Inside Back Rs. 35,000/- (four colour)

Mechanical Data
Overall Size 27.5 cms x 21.5 cms
Full Pages Print Area 24 cms x 18 cms
Half Page 12 cms x 18 cms or
24 cms x 9 cms
Qtr Page12 cms x 9 cms

प्रधान संपादक
प्रो. श्यौराज सिंह 'बेचैन'
संपादक
प्रो. दिनेश राम
सहायक संपादक
डा. अनिरुद्ध कुमार 'सुधांशु'
तान्या लाम्बा
भाषा सहयोग
डा. हेमंत कुमार 'हिमांशु'
डा. राजकुमार राजन
कानूनी सलाहकार
एड. सतपाल विर्दी
एड. संदीप दहिया

संपादकीय सलाहकार एवं विषय विशेषज्ञ
डा. वी. पी. सिंह, प्रो. राजेन्द्र बड़गूजर, बलवीर माधोपुरी, प्रो. फूलबदन, प्रो. नामदेव, प्रो. सुजीत कुमार, डा. चन्देश्वर, डा. दीनानाथ, डा. मोहन चावड़ा, विजय सौदायी, डा. यशवंत वीरोदय, डा. सुरेश कुमार, डा. मनोज दहिया

अप्रवासी समाज, संस्कृति और साहित्य के विशेषज्ञ
ओमप्रकाश वाघा, नरेन्द्र खेड़ा, राम बाबू गौतम, डा. गुलशन नजरोवना जुगुरोवा, डॉ. बयात रहमातोव, डा. सिराजुद्दीन नूरमातोव

- पत्रिका पूरी तरह अवैतनिक और अव्यावसायिक है।
- पत्रिका से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
- अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है।
- 'बहुरि नहिं आवना' के सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट 'बहुरि नहिं आवना' के नाम से स्वीकृत किये जायेंगे।
- स्वामी, संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक प्रो. दिनेश राम की ओर से भारत ग्राफिक्स, सी-83, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-20 द्वारा मुद्रित एवं एफ-345, लाडो सराय, नई दिल्ली- 30 से प्रकाशित।
- 'बहुरि नहिं आवना' में प्रकाशित लेखों में आये विचार लेखकों के अपने हैं जिन से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

Shot on OnePlus

अनुक्रम

संपादकीय	*–दिनेश राम*	4
1. चाण्डालत्व से ब्राह्मणत्व तक : पूर्व-मध्यकालीन भारत में	*–प्रो. विजया लक्ष्मी सिंह*	
अछूतों के अंदर सामाजिक गत्यात्मकता	*–डॉ. प्रेम कुमार*	5
2. हिन्दू कोड बिल	*–डॉ. संजीव कुमार गौतम*	15
3. भीमगीत : भोजपुरी लोक में बहुजन अस्मिता का हस्तक्षेप	*–धनंजय सिंह*	21
4. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कहानियों में चित्रित पहाड़ी जीवन ('बस एक ही इच्छा' कहानी संग्रह के सन्दर्भ में)	*–डॉ. पठान रहीम खान*	25
5. तुलसी के मानस काव्य में लोक दृष्टि	*–डॉ. श्रवण कुमार*	29
6. हैदराबाद का आदि हिन्दू आंदोलन और स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' (1906-1931)	*–अभिलाष वेन्ना*	32
7. मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में दलित प्रश्न	*–डॉ. राजेंद्र घोडे*	35
8. वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में लोकसंस्कृति	*–डॉ. शशिकला*	37
9. निराला का काव्य और भारतीय संस्कृति	*–प्रज्ञा मिश्रा*	41
10. पद्मा शर्मा की कहानियों में नारी पात्रों की मनःस्थिति का विश्लेषण	*–कृष्ण कुमार थापक* *–डॉ संगीता पाठक*	45
11. भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के मध्य सांस्कृतिक संश्लेषण फैलाने में महान सम्राट अशोक का योगदान	*–ललित सिंह*	49
12. दलित जीवन-संघर्ष और मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास	*–विद्यार्थी कुमार (शोधार्थी)*	53
13. 'बेघर' उपन्यास : प्रेम एवं पुरुष अहं का संघर्ष	*–श्रीमती मेनुका श्रीवास्तव*	56
14. दलित स्त्री मुक्ति का स्वकथन : अपनी जमीं अपना आसमां	*–कुसुम सबलानिया*	59
15. फिल्म 'कशमकश' और रवींद्रनाथ टैगोर कृत उपन्यास 'नाव दुर्घटना' का तुलनात्मक अध्ययन	*–श्रेयसी सिंह*	63
16. 'सूरजमुखी अँधेरे के' में अभिव्यक्त स्त्री मन की पीड़ा	*–सुमन साहू*	66
17. विमर्शों से आगे : एक रास्ता यह भी	*–डॉ. राजेश कुमार*	69
18. 'उत्कोच' दलित मानवीय संवेदना का सच	*–उषा यादव*	74
19. वर्तमान परिदृश्य में प्राचीन सामाजिक-राजनीतिक चिन्तन की प्रासंगिकता	*–अरुण कुमार*	77
20. महिला सशक्तिकरण और पंचायती राज व्यवस्था : एक अवलोकन	*–डा. ज्योति सिंह गौतम*	81
21. पितृसत्ता का उद्भव और हिन्दी उपन्यास : विशेष संदर्भ जैनेन्द्र का सुनीता	*–डा. रजनी दिसोदिया*	85
22. जापानी इतिहास एवं समाज : एक विश्लेषण	*–डॉ सूरज प्रकाश वडत्या*	90
23. ब्रिटिश शासन एवं क्रान्तिकारी संघर्ष में कानपुर की भूमिका	*–अभिषेक सचान* *–डॉ. आर. के. विजेता*	95

24. उच्च-शिक्षा में आदिवासी बालिकाओं की स्थिति : मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में	*–अनुज कुमार पाण्डेय* *–डॉ. देवी प्रसाद सिंह*	99
25. काशीनाथ सिंह का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प	*–कुमारी रेनू*	102
26. मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' और 'ब्रह्मराक्षस' में फैंटेसी	*–पूरन कुमार*	105
27. महिला सशक्तिकरण और अम्बेडकर के विचार : एक अवलोकन	*–डॉ. जितेन्द्र कुमार*	108
28. भिक्षावृत्ति का समाजशास्त्र	*–विनय कुमार सिंह*	111
29. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री मुक्ति के प्रसंग : एक दृष्टि	*–डॉ. अखिलेश कुमार*	115
30. लोकसाहित्य और मुस्लिम समाज	*–डॉ. विजय कुमार चौबे*	120
31. वर्णवादी समाज और संस्कृति का दलित साहित्य से विलगाव	*–डॉ. अमित कुमार*	124
32. सामासिक संस्कृति के निर्माण में सूफी कवियों का योगदान	*–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्विवेदी*	128
33. रामवृक्ष बेनीपुरी के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	*–डॉ. प्रकृति राय*	131
34. स्वधर्म से स्वराज : विनायक दामोदर सावरकर	*–डॉ. प्रखर कुमार*	134
35. दादा कामरेड उपन्यास में स्त्री का द्वंद्व और संघर्ष	*–डॉ. प्रीति देवी*	138
36. युवा एवं सोशल मीडिया : शैक्षिक अध्ययन एवं निष्पत्ति के संदर्भ में	*–प्रियंका दीक्षित* *–प्रो. मुकेश चंद*	141
37. हिंदी दलित कहानियों में अंतर्जातीय प्रेम विवाह और ऑनर किलिंग का स्वरूप	*–अलका जिलोया*	146
38. सरदार जाफ़री की 'कबीर बानी' : रचनात्मक बनावट और प्रासंगिक महत्ता	*–तरुण त्रिपाठी*	150
39. मिथकीय चेतना के आलोक में एक और द्रोणाचार्य	*–नवीन कुमार* *–प्रो. अश्विनी कुमार शुक्ल*	154
40. महिलाओं के सशक्तीकरण में शिक्षा की भूमिका एवं प्रभाव (उ. प्र. के विशेष संदर्भ में)	*–कोमल सिंह*	157
41. शिक्षक की अपने विषय के प्रति जागरुकता एवं कक्षा अध्यापन में सम्प्रेषण तकनीकी की भूमिका	*–डॉ. आशीष कुमार*	162
42. भारतीय वाङ्मय में निहित मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में पर्यावरण संरक्षण	*–मनीषा मिश्रा*	165
43. प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभूमि' में गाँधीवाद : एक मूल्यांकन	*–डॉ. सपना भूषण* *–डॉ. प्रीति विश्वकर्मा*	169
44. जोतिराव फुले : सामाजिक क्रांति के अग्रदूत	*–डॉ. प्रकाश वीर दहिया*	173
45. सदियों के बहते जख्म में अभिव्यक्त दलित-संवेदना	*–कुमारी अनीता*	177
46. आदिवासी समाज के संदर्भ में स्त्रियों की समस्याएं	*–राजलक्ष्मी जायसवाल*	180
47. दिन बहुरने की बाट जोहता विमुक्त या घुमन्तू समुदाय	*–शेषांक चौधरी*	183
48. भोजपुरी समाज और भिखारी ठाकुर	*–जितेंद्र कुमार यादव*	186

Shot on OnePlus

'सूरजमुखी अँधेरे के' में अभिव्यक्त स्त्री मन की पीड़ा

—सुमन साहू

'सूरजमुखी अँधेरे के' कृष्णा सोबती का एक चर्चित उपन्यास है। यह 1972 में प्रकाशित किया गया। सोबती का यह उपन्यास तीन खंडों पुल, सुरंग, आकाश में विभक्त है। तीनों खंड फ्लैशबैक शैली पर आधारित हैं, जिसमें कभी नायिका के वर्तमान को दिखाया है; कभी अतीत को। कृष्णा सोबती ने 'सूरजमुखी अँधेरे के' उपन्यास के अंतर्गत स्त्री मन की कई गांठों को खोलने का प्रयास किया है तथा स्त्री के अंतर्मन की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। यह उपन्यास एक ऐसी लड़की की कहानी प्रस्तुत करता है जिसका बचपन में बलात्कार हुआ है और वह इस 'बलात्कार' शब्द से अनभिज्ञ है, क्योंकि उस छोटी सी बच्ची को यह नहीं पता कि बलात्कार सामाजिक दृष्टि से एक जघन्य अपराध माना जाता है और इसमें गुनाहगार को तो बख्श दिया जाता है, पर जिसके साथ गुनाह हुआ है उसे अपराधी मान कर यह समाज बार-बार उसको मानसिक चोट पहुंचाने की कोशिश करता है। समाज द्वारा एक लड़की के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है जैसे बलात्कार उसकी सहमति से हुआ है और उसने खुद सामने वाले को उकसाया होगा। हमारे समाज की यही सोच एक मासूम सी बच्ची को मानसिक पीड़ा से जूझने के लिए छोड़ जाती है। रत्ती भी इस मानसिक अंतर्द्वंद से गुजरती नजर आती है। उसे समाज तथा परिवार द्वारा एक दोषी के नजरिए से देखा जाता है। बलात्कार की एक घटना की वजह से रत्ती का जीवन और जगत के प्रति दृष्टिकोण परिवर्तित हो जाता है। सोबती के इस उपन्यास के माध्यम से हमें यह भी देखने को मिलता है कि किस प्रकार समाज अपने सड़े-गले पुराने नियमों और विधानों द्वारा एक स्त्री की स्वतंत्रता को छीनने की साजिश करता है जिसमें पुरुषों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यहां रत्ती शिमला के हवा-घर में हुए इस हादसे को कभी भूल नहीं पाती क्योंकि उसे यह बात बार-बार स्मरण कराई जाती है। स्कूल में उसके सहपाठियों द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है जिससे वह अत्यंत दुखी होती है पर वह कभी हार नहीं मानती। वह अपनी परिस्थितियों से निरंतर लड़ती है; कभी दुबक कर चुपचाप बैठना उसको मंजूर नहीं। जब उसके साथियों द्वारा उसे अपमानित किया जाता है तब वह अपने बल का प्रयोग कर अपने आत्मसम्मान की रक्षा करती है।

"अज्जू के कान के पास मुंह ला कर धीमे से कहा—किसी ने बुरा काम किया था न तुम्हारे साथ? खून निकला था न?" रत्ती ने आगे कुछ सुना नहीं। फटाक से सूरजमुखी का ढेर अज्जू के मुँह पर दे मारा—"मारूंगी, मैं तुम्हें और

मारूंगी ?'' नुचे हुए पंखों-सी सूरजमुखी की पंखुड़ियां सड़क पर बिखरी रहीं। रत्ती के मानस पटल पर वही पुरानी स्मृतियां घूमने लगीं। वह हवा-घर वह भद्दा चेहरा वह नीचे पटकता हाथ।"[1] रत्ती का आक्रोश इसलिए भी बढ़ता जाता है कि उसकी पीड़ा कोई नहीं समझता, खुद उसके ममा-पापा भी नहीं। जब रत्ती द्वारा अज्जू को पीटने पर बिना कोई कारण जाने पापा रत्ती को चपत जड़ देते हैं, तब रत्ती फूटती रुलाई को बरबस रोक भर्राए गले से कहती है–''आप दोनों गंदे हो! गंदे!"[2] रत्ती को लगता है कि उसके आत्मसम्मान की सुरक्षा की जिम्मेदारी अब उसके खुद की है इसलिए जब डिम्पी, अज्जू, पिक्कू, श्यामली के द्वारा उसे बुरी और गंदी लड़की कहा जाता है तब–''जी कड़ा कर के रत्ती ने आँसुओं को गले से नीचे उतार लिया और अपने को समझा कर कहा–चुप! एक-एक को पकड़कर पीट देना।"[3] अब अपने समवयस्कों के प्रति उसके हृदय में नफरत और आक्रोश भर गया है। तोषी, पाशी, त्रिलोकी आदि लड़के भी उसे चिढ़ाते हैं, तब वह बहादुरी और निडरता से उन्हें चुनौती देती है–''फिर कभी ऐसा हुआ तो फाड़ डालूंगी किसी से कुछ कहती नहीं, पर याद रखना अब छेड़छाड़ की तो छोड़ूंगी नहीं समझे।"[4] वह बच्ची यह नहीं समझ पाती है कि उसने आखिर ऐसा क्या कर दिया है कि सब उसे हिकारत की दृष्टि से देखने लगे हैं। क्यों? उसको हर बार तिरस्कार और उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। दुष्कर्म की यह एक घटना रत्ती के जीवन को क्षत-विक्षत कर देती है।

रत्ती की आत्मावहेलना का कारण स्वयं रत्ती नहीं है वरन् हमारे समाज की संकीर्ण सोच और सामाजिक कुव्यवस्था है जो एक स्त्री को मानसिक रुप से अपने गिरफ्त में ले लेती है और उसे अंधेरे में ले जाकर पटक देती है, जिससे वह बाहर निकलने को छटपटाती है और स्वयं से ही निरंतर संघर्ष करती है। हमारा समाज स्त्री को देवी कह कर उसे पूजा की वस्तु मानकर बड़ी चालाकी से उसके दायरे को सीमित करने की कोशिश में लग जाता है। यह समाज कभी एक स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व की स्वीकृति नहीं देता। एक समाज में स्त्री को तब तक पूजा जाता है जब तक वह पाक व पवित्र है क्योंकि उसकी शारीरिक पवित्रता को परिवार की मान-सम्मान का परिचायक माना जाता है और उससे यह आशा की जाती है कि वह मर्यादाओं का पालन करे, अगर उसकी छवि इसके विपरीत नज़र आती है तो उसे तमाम प्रकार की अवहेलनाओं का सामना करना पड़ता है। ''जब से समाज वर्गों में बंटा है, औरत का यौन-उत्पीड़न होता रहा है। यह एक ऐतिहासिक सच है। नारी के शोषण के रूप बदलने के साथ यौन-शोषण व यौन-उत्पीड़न का स्वरूप भी बदलता रहा है। सामंती समाज में वह विलासिता और उपभोग की सामग्री मात्र थी। आज वह इसके साथ ही 'कमोडिटी' और निकृष्टतम कोटि की गुजरती गुलाम भी बना दी गई है। पूंजी के पूरे तंत्र में उसके लिए विशेष पेशे ईजाद किए गए हैं जो जनता के पुरूष हिस्से के मुकाबले उसे अतिरिक्त आर्थिक शोषण और अतिरिक्त उत्पीड़न यानी यौन-उत्पीड़न एवं यौन-शोषण का शिकार बनाते हैं।"[5] रत्ती के साथ बाल्यकाल में हुए बलात्कार के कटु अनुभव को उसके समक्ष बार-बार दोहराया जाता है जिस वजह से रत्ती स्वयं को पूरी औरत नहीं मानती। वयस्क होने पर यही आक्रोश उसके व्यक्तित्व में उभरकर सामने आता है। रतिका कुण्ठाग्रस्त जीवन जीने को मजबूर है, जहां वह अपने ही सवालों में और अपने ही ख्यालों में कैद होकर रह गई है।''भविष्य वह अंधी आंखों वाला वक़्त बना रहा जिससे रत्ती ने कभी साक्षात्कार नहीं किया। वक्त के पंजों-तले जितनी बार छटपटाई, उतनी बार तिलमिलाई। उतनी बार हाथ-पाँव पटके।"[6] वह अपने अतीत की घटना को विस्मृत करने के लिए प्रायः बियर, जिन, शैम्पेन का आश्रय लेती है, परंतु मदोन्मत्त अवस्था के समाप्ति होने पर पुनः हवा-घर वाली घटना स्मृति लोक में प्रवेश कर उसे आक्रान्त करती है।

रतिका के जीवन में अनेक पुरुष पात्र जैसे- रोहित, राजन, जगतधर, रंजन, बाली, सुमेर, मुकुल, भानुराव, सुब्रामनियम, बिनु, जगन्नाथ, श्रीपत आदि रतिका के साथ प्रेम का पाखंड, सहानुभूति तथा मित्रता का झूठा संबंध बनाकर देह भोग की लालसा में उसकी ओर उन्मुख होते हैं पर जब रतिका द्वारा कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलती तब उसे एक ठंडी मनहूस लड़की कह दिया जाता है। पुरुष अपने झूठे अहंकार की संतुष्टि के लिए उसके औरत होने तक पर सवाल उठाते हैं। पुरुषों द्वारा अक्सर एक स्त्री की देह को ही उसकी पहचान का प्रतीक माना जाता है, यदि यह नहीं तो मानों वह स्त्री नहीं। सोबती ने कुछ पुरुष पात्रों के माध्यम से समाज में व्याप्त सामंतवादी सोच को भी व्यक्त किया है। जगतधर और मीता के प्रसंग में यह देखा जा सकता है जहां जगतधर रतिका से कहते हैं–''मीता है पर मैं तुम्हें चाहता हूँ तुम्हें रत्ती।"[7] यहां पर स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है कि जगतधर किस प्रकार रतिका और मीता दोनों स्त्रियों को पा लेना चाहता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि वह दोनों ही स्त्रियों की देह से खिलवाड़ कर उन्हें किसी बेकार चीज़ की तरह दरकिनार कर देगा। रतिका को जब इस बात का अहसास होता है कि जगतधर की लुब्ध दृष्टि उसकी देह पर है तब वह उसे मना करने का

बोल्ड निर्णय लेती है।

यहां पर स्त्रियों की देह को लेकर भारतीय समाज व्यवस्था की घिनौनी परम्परा भी हमें देखने को मिलती है। स्त्रियों की देह पर स्वयं स्त्रियों का नियंत्रण न होकर पुरुषों का होता है। अगर एक स्त्री अपनी वासना-तुष्टि के लिए पति के अलावा अन्य पुरुषों से संबंध बनाती है तो यह समाज बौखला उठता है। "शरीर चूंकि स्त्री का दुखता हुआ घाव होता है, उसके शोषण की प्राइम साइट, वह इसे लेकर हमेशा सशंक रहती है। सर्वेक्षण बताते हैं कि दस लाख में से एक संबंध ही ऐसा होता है, जहां किसी मजबूरी में शरीर चारे की तरह बिछाने की या प्रयोजनसिद्धिमूलक कोई संबंध बनाने की या 'आ बैल मुझे मार' कहने की पहल कोई स्त्री करती है। देह का इस्तेमाल रिश्वत के रूप में वह करें जिसमें प्रतिभा कम हो या जो मेहनत से डरे, क्योंकि स्त्रियां मेहनत से नहीं डरतीं, दस हाथों से दस दिशाओं में फैले दस काम लगातार ही साधती चलती हैं। वह भी सेवा भाव से, इन्हें आंकी-बांकी राह चल के विकास के मामूली अवसर 'वरदान' रूप में किसी से वसूलने की जरूरत ही क्या?"[8]

सोबती पुरुषों को न केवल सामंती मानसिक सोच के रूप में चिन्हित करती हैं वरन् उन्होंने पुरुषों के उदार चरित्र को भी बतलाया है। उनके यहां पुरुष, स्त्री के प्रति स्नेहिल मानवीय संबंध भी रखता है, उसे उसके दुःख और पीड़ा से निजात दिलाने की कोशिश करता है। रत्ती के जीवन में असद और दिवाकर ऐसे ही पुरुष पात्र हैं जिन्होंने रतिका के सच को जानते हुए भी उससे घृणा नहीं की, उससे साहचर्य और प्रेम का संबंध स्थापित किया। असद के सानिध्य में रत्ती को अपने होने का अहसास होता है। वह कुछ वक्त के लिए अपनी मानसिक पीड़ा से मुक्ति पा लेती है, पर असद भाई के गुजर जाने पर वह स्वयं को अकेला महसूस करती है, दुःखी होती है। वह असद द्वारा कहे गए कथन को हमेशा याद रखती है—"रतिका तुमने सिर उठा कर अपने लिए लड़ाई लड़ी है। कड़वाहट के जहर से अपने को दुश्मन नहीं बनाया, दोस्त नहीं मिला तो दोस्ती को दुश्मनी नहीं समझा। तुम एक अच्छी लड़की। प्यारी वहादुर।"[9]

जव दिवाकर रतिका के जीवन में आता है तव रतिका के प्रेम को विस्तार मिलता है। दिवाकर रतिका के अंदर चल रहे आंतरिक द्वन्द्व और मनोग्रंथि का पता लगाना चाहता है तथा रतिका के अंदर व्याप्त हीनभाव को समाप्त कर देना चाहता है। अक्सर जव भी रतिका को कोई पढ़ने की कोशिश करता है तो वह झुँझला उठती है। प्रथम खंड 'पुल' के अंतर्गत उसके मित्र रीमा और केशी द्वारा उसके अंतर्मन को पढ़ लिया जाता है तव वह उत्तेजित स्वर में केशी से कहती है—"किसलिए-किसलिए तुम ऐसी सर्द बेरहमी से मेरे ही लिए मुझे 'डिफाइन' किया करते हो! मुझे ही टाइप कर मेरी टाइप कॉपी मेरे सामने डाले जाते हो।"[10] दिवाकर रतिका के एकांत व उसके अंदर चल रहे उसकी खुद की लड़ाई को विराम देना चाहता है। वह रतिका से कहता है—"रतिका तुमने अपने इर्द-गिर्द कँटीली तारे लगा रखी हैं। अंदर खड़े-खड़े वाहर वालों से कहा करती हो सँभलकर इधर मत आना काँटे हैं काँटे!" रत्ती कई देर तक हँसती रही—"जानते हो दिवाकर, तुमने रत्ती के अंतरंग टेलीफोन का नंबर ढूँढ निकाला है।"[11]

इस औपन्यासिक कृति में सोबती ने स्त्री मन में चल रहे अंतर्द्वन्द्व तथा तनाव ग्रसित स्त्री के आक्रोश, प्रतिशोध का मनोवैज्ञानिक विवेचन तथा विश्लेषण किया है। कहानी के अंत में दिवाकर के प्रति आत्मीय संबंध के कारण समर्पण के माध्यम से वह देह व आत्म-पीड़ा से मुक्त होती है।

सन्दर्भ सूची

1. सोबती कृष्णा : सूरजमुखी अंधेरे के, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2018, पृ. 47
2. वही, पृ. 50, 3. वही, पृ. 53, 4. वही, पृ. 56
5. कात्यायनीः दुर्ग द्वार पर दस्तक, परिकल्पना, लखनऊ, 1998, पृ. 36,
6. सोबती कृष्णा : सूरजमुखी अंधेरे के, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2018, पृ. 98
7. वही, पृ. 70
8. अनामिका : स्त्री विमर्श की उत्तरगाथा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 13
9. सोबती कृष्णा : सूरजमुखी अंधेरे के, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2018, पृ. 120
10. वही, पृ. 40
11. वही

–सुमन साहू
(शोधार्थी हिन्दी)
शोध निर्देशक, डा. यशवंत कुमार साव
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई
पत्राचार का पता :
ग्राम-करगाडीह, पो. खोपली
जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़
पिन-491107